**डॉ० शैलेन्द्र मोहन मिश्र**

**स० प्रा० मैथिली विभाग**

**सी० एम० जे० कॉलेज**

**दोनवारी हाट खुटौना**

**मो०न० 9546743796**

**Email-** **mishrasm966@gmail.com**

**B. A. III**

 **लक्षणा शब्द शक्तिक परिचय ( भेद – प्रभेद सहित )**

 **शब्द आ अर्थक सम्बन्ध कें बतौनिहार साधनक नाम शब्द शक्ति अछि | शब्द – शक्ति तीन प्रकारक होइत अछि | एहिमे लक्षणा शब्द –शक्तिक स्थान दोसर अछि | मुख्यार्थक बाधित भेला उत्तर रूढ़ि वा प्रयोजनक कारण जाहि शक्ति सँ ओहि सँ ( मुख्यार्थ सँ ) सम्बद्ध अन्य अर्थक ज्ञान हो ओहि शब्द – शक्ति कें लक्षणा – शक्ति कहल जाइत अछि | एकरा दोसर रुपमे इहो कहल जा सकैछ जे जखन शब्दक वाचक रुपमे प्रयोग नहि कए , ओहिसँ सम्बन्धित कोनो अन्य अर्थक प्रयोग कएल जाए ओतए लक्षणा होइत अछि | लक्षणा – शक्ति सँ लाक्षणिक अर्थ वा लक्ष्यार्थक प्रतीति होइत अछि | जाहि शब्दसँ लक्ष्यार्थक बोध होइत अछि ओकरा लक्ष्यक कहल जाइत अछि | एतावता ज्ञात होइत अछि जे एहि शब्द – शक्ति द्वारा सामान्य , प्रत्यक्ष वा सांकेतिक अर्थ नहि लेल जैत अछि वल्कि लक्षण सभसँ प्राप्त होमएवला अर्थ मुख्यतः ग्रहण कएल जाइत अछि , यथा – सूर्य अस्त भए गेल ; एहि वाक्यक अभिधेयार्थ अछि सूर्य डूबि गेल , मुदा प्रकृतिमे प्रकट होमएवला लक्षण सँ प्राप्त होमएवला लक्ष्यार्थ अछि – साँझ भए गेल | वस्तुतः लक्षणा अर्थ – व्यापार अछि |**

 **रूढ़ि वा योजनाक दृष्टि सँ लक्षणा शब्द – शक्ति दू भेद होइत अछि –**

**1 रूढ़ि लक्षणा 2 प्रयोजनवती लक्षणा**

**1 रूढ़ि लक्षणा : - रूढ़ि लक्षणा ओ अछि , जाहिमे रूढ़िक कारण मुख्यार्थ कें छोडिकए ओहिसँ सम्बन्ध राखएवला अन्य अर्थ ग्रहण कएल जाए , यथा उड़ीसा गरीब अछि | उड़ीसा राज्य गरीब नहि भए सकैछ | एतए उड़ीसामे वास करएवलाक लेल उड़ीसा शब्द प्रयुक्त भेल अछि | एहिसँ स्पष्ट अछि जे रूढ़ि लक्षणाक कारण उड़ीसाक अर्थ उड़ीसावासी अछि |**

 **आचार्य मम्मट रूढ़ि मूला लक्षणाक कोनो भेद नहि कएलनि अछि | मुदा आचार्य विश्वनाथ रूढ़ि मूला लक्षणाक सोलह भेद कएलनि अछि |**

**2 प्रयोजनवती लक्षणा : - जखन कोनो विशेष प्रयोजन वा उद्देश्यक कारण लक्षणा कएल जाए तखन प्रयोजनवती लक्षणा होइत अछि | एकरा फल लक्षणा सेहो कहल जाइतअछि | प्रयोजनवती लक्षणामे कोनो विशेष प्रयोजन वा फलक कारण मुख्यार्थ मे रुकावट भेला पर ओहिसँ सम्बन्ध राखएवला अन्य अर्थ वा लक्ष्यार्थ ग्रहण कएल जाइत अछि , यथा – स्टेशन पर घर अछि | एहि वाक्य मे प्रयोजनवती लक्षणा अछि | प्रयोजनवती लक्षणाक दू भेद अछि :-**

**( क ) गौणी प्रयोजनवती लक्षणा – जखन समानगुण वा सादृश्य सम्बन्धक कारण लक्षणा कएल जाए तखन गौणी प्रयोजनवती लक्षणा होइत अछि , यथा – मुँह कमल अछि | एहि वाक्यमे मुँह कमल नहि भए सकैछ , मुदा गौणी प्रयोजनवती लक्षणाक द्वारा एकर अर्थ भेल मुँह आ कमलक गुणमे समानता अछि | कमलक गुण अछि कोमलता आ सुन्दरता जे मुँहमे सेहो विद्यमान अछि | अतएव गुणक समानताक कारण मुँह कमल अछि – एहि वाक्यक अर्थ भेल मुँह कमलक सदृश अछि |**

 **गौणी लक्षणाक दू भेद अछि -**

 **( अ ) सारोपा गौणी लक्षणा :- सारोपा ओतए होइत अछि जतए आरोप पूर्णत: स्पष्ट हो | मुख्यार्थक वाधित भेला पर उत्तर सादृश्य सम्बन्धक आधार पर आरोप आ आरोप्यमान – दुनूक कारण जतए अन्य अर्थक प्रतीति होइत अछि ओतए सारोपा गौणी लक्षणा होइत अछि , यथा – नयन तीर सँ ओ विंध गेल | एतए नयन ( उपमेय ) पर तीर ( उपमानक ) आरोप कएल गेल अछि | उपमेय – उपमान दुनूक उपादान पृथक रुप सँ भेल अछि | अतः लक्षणा शब्द शक्तिये सँ ई उपादान भेलाक कारण एतए सारोपा गौणी लक्षणा अछि |**

 **( ब ) साध्यवसाना गौणी लक्षणा :- साध्यवसान शब्दक अर्थ होइत अछि विलीन | एहि रूप सँ साध्यवसानाक अर्थ हित अछि – विलीन कए देब | अतएव जतए लक्षणा शब्द – शक्तिक जाहि रुपमे उपमेय मे उपमान कर्ण विलीन कए देल जाइत अछि ओतए साध्यवसाना गौणीलक्षणा शब्द शक्ति होइत अछि – देखू चान निकललअछि एखने | एहि ठाम आकाश मे चन्द्रमा निकलल अछि से अर्थ नहि , बल्कि चंद्रमा सँ सुन्दरीक मुखमंडल सँ अर्थ अछि तथा उपमेय मुख मे उपमान ( आरोप्यमान ) चान ( चंद्रमा ) मे अवसान कए देल गेल अछि | अतएव एतए सादृश्यक गुणक कारण साध्यवसाना गौणी लक्षणा होइत अछि |**

 **शुद्धा लक्षणाक दू भेद कएल गेल अछि :-**

 **( अ ) उपादान लक्षणा ( ब ) लक्षण लक्षणा**

**अ . शुद्धा उपादान लक्षणा :- जखन प्रयोजनीय अर्थक सिद्धिक लेल अन्य अर्थ कें ग्रहण कएलो पर अपन अर्थ नहि छुटए अर्थात मुख्यार्थ बनल रहए तखन शुद्धा उपादान लक्षणा होइत अछि , यथा – पागक लाज राखू | पागक लाज रखबा मे मुख्यार्थ बाधित अछि | एतए लक्षणा सँ अर्थ होएत पागधारीक लाज | एहि अर्थमे पागक अपन अर्थ बिल्कुल नहि छूटैत अछि , दुनू संग – संग रहैत अछि |**

 **उपादानक अर्थ अछि ग्रहण वा लेब | एहिमे वाच्यार्थक परित्याग नहि होइत अछि | अपन स्वार्थ नहि छोड़बाक कारण एकरा अजहात्स्वार्था सेहो कहल जाइत अछि |**

**ब . शुद्धा लक्षण – लक्षणा – एहिमे प्रयोजन प्राप्त अर्थ सिद्धिक लेल मुख्यार्थकें ग्रहण कएल जाइत अछि | अतएव जतए वाक्यार्थक सिद्धिक लेल वाच्यार्थ अपना कें छोडि कए मात्र लक्ष्यार्थ कें सूचित करए , ओतए शुद्धा लक्षणा होइत अछि , यथा – पेटमे मूस कुदैत अछि | पेटमे मूसक कुदब संगत नहि अछि | अतः मुख्यार्थ बाधित भए गेल , लक्षण सँ मूसक कुदब ‘ जोर सँ भूख लागब ‘ मे बदलि गेल | एतए जोरसँ भूख लागब जे अन्य अर्थ भेल , ओकर मुख्य अर्थ ( मूसक कुदब ) सँ कोनो सम्बन्ध नहि रखैत अछि |**

**शुद्धा उपादान लक्षणाक दू गोट भेद अछि :-**

**स . सारोपा शुद्धालक्षण लक्षणा :- जतए मुख्यार्थक बाधा भेला पर सादृश्य कें छोडि कए अन्य सम्बन्धक सहारा आरोप आ आरोप्यमान दुनूक स्पष्ट कथनक द्वारा अन्य अर्थक प्रतीति होइत अछि , ओतए सारोपा शुद्धा लक्षण- लक्षणा होइत अछि , यथा –**

 **देखू स्वामी भुजंग बैसल**

 **कंचनक घैल दबाए |**

**एतए स्वामीमे भुजंगक अरोपन अछि , विषय – विषयी दुनू अछि | एहि हेतु सारोपा भेल’ स्वामी – भुजंग ‘ अपन वाच्यार्थ कें पूर्णत: छोडि ,ओतएसाध्यवसानाशुद्धा लक्षण लक्षणा होइत अछि , यथा**

 **‘ विद्युतक एहि चकाचौंध मे देखू दीपकली कनैत अछि |**

 **अरे हृदय कें थाम महलक लेल कुटिया बलि देत अछि ||**

**एतए कुटिया वा महल सँ गरीब आ धनीक अन्यार्थ बोध होइत अछि | मात्र आरोप्यमानक कथन सँ साध्यवसाना शुद्धा लक्षण लक्षणा एतए अछि |**

 **एतावता ज्ञात होइत अछि जे सभ मिलाय कें लक्षणा शब्द – शक्तिक इएह भेद – प्रभेद अछि| एकर अतिरिक्त ई देखल गेल अछि जे सभ भेदक स्वरूपक विधान लक्ष्यार्थेंक आधार पर कएल गेल अछि|**